

## जनपद प्रयागराज के आर्थिक विकास में धार्मिक पर्यटन की भूमिका

बाल गोविंद <sup>1</sup>, डॉ. कुमार अमित <sup>2</sup>

<sup>1</sup> शोधार्थी, भूगोल विभाग, दयानंद एंग्लो-वैदिक (पीजी) कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

<sup>2</sup> एसोसिएट प्रोफेसर, भूगोल विभाग, दयानंद एंग्लो-वैदिक (पीजी) कॉलेज, कानपुर, उत्तर प्रदेश

### सारांश:

यह शोध पत्र प्रयागराज जिले के आर्थिक विकास में धार्मिक पर्यटन की महत्वपूर्ण भूमिका का पता लगाता है, जिसे पहले इलाहाबाद के नाम से जाना जाता था, यह शहर अपने आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। यह शोध पत्र इस बात पर गहराई से चर्चा करता है कि कैसे प्रमुख धार्मिक आयोजन, विशेष रूप से कुंभ मेला, क्षेत्र के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष आर्थिक विकास में योगदान देता है। कुंभ मेला, जो दुनिया भर में सबसे बड़े धार्मिक समारोहों में से एक है, आतिथ्य, परिवहन और स्थानीय व्यवसायों जैसे विभिन्न क्षेत्रों से पर्याप्त राजस्व उत्पन्न करता है, जो उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान देता है। अध्ययन में तीर्थयात्रियों की भारी आमद को समायोजित करने के लिए सड़क नेटवर्क, सार्वजनिक सुविधाओं और स्वच्छता सुविधाओं में वृद्धि सहित बुनियादी ढांचे के विकास के महत्व पर प्रकाश डाला गया है। इसके अतिरिक्त, यह निर्माण, आतिथ्य और कार्यक्रम प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में अस्थायी रोजगार के अवसरों के निर्माण के साथ-साथ स्थानीय रोजगार क्षमता बढ़ाने में कौशल विकास पहल की भूमिका की जांच करता है। हालाँकि, यह शोध पत्र पर्यावरणीय प्रभावों के प्रबंधन और सतत बुनियादी ढांचे के विकास को सुनिश्चित करने जैसी प्रमुख चुनौतियों को भी संबोधित करता है। धार्मिक पर्यटन के प्रतिकूल प्रभावों को कम करने और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने के लिए एकीकृत योजना, हितधारक सहयोग और सतत प्रथाओं के कार्यान्वयन के लिए सिफारिशें की गई हैं। अंततः, अध्ययन में इस बात पर जोर दिया गया है कि प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन आर्थिक और सामाजिक दोनों लाभ प्रदान करता है, बशर्ते कि भविष्य की योजना में स्थिरता को प्राथमिकता दी जाए।

**कीवर्ड:** प्रयागराज, धार्मिक पर्यटन, आर्थिक विकास, कुंभ मेला, बुनियादी ढांचा, रोजगार

### परिचय:

प्रयागराज का आर्थिक विकास धार्मिक पर्यटन गतिविधियों पर बहुत हद तक निर्भर करता है, क्योंकि कुंभ मेला जिले में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। कुंभ मेला हर साल लाखों प्रतिभागियों को आकर्षित करता है, जो दुनिया के सबसे बड़े धार्मिक समागमों में से एक बन जाता है, जो कई व्यावसायिक क्षेत्रों से पर्याप्त धन अर्जित करता है। आयोजन के दौरान धार्मिक आगंतुक आतिथ्य सेवाओं से लेकर परिवहन, भोजन प्रदाताओं और सभी प्रकार के स्थानीय व्यवसायों की बिक्री में उल्लेखनीय वृद्धि करते हैं। मेले के समय हर दिन होने वाली तीर्थयात्रा स्थानीय अर्थव्यवस्था में आर्थिक प्रभाव का एक स्थिर प्रवाह उत्पन्न करती है। कुंभ मेले में मौसमी आर्थिक विकास के पहले लाभार्थियों में स्थानीय विक्रेता, होटल व्यवसायी और परिवहन सेवा प्रदाता शामिल हैं। इन दोनों समूहों को आयोजन अवधि के दौरान हर साल अपने व्यवसाय का विस्तार होता हुआ दिखाई देता है।

प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन से अल्पकालिक नकदी प्रवाह लाभ होता है और स्थानीय बुनियादी ढांचे के स्थायी आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलता है। कुंभ मेले के लिए बेहतर सुविधाओं और आवास तथा परिवहन आवश्यकताओं ने पूरे जिले में सार्वजनिक बुनियादी ढांचे के विकास को गति दी। मेले में आगंतुकों की बड़ी संख्या के लिए सड़क और परिवहन नेटवर्क के विस्तार के साथ-साथ बेहतर स्वच्छता मानकों की आवश्यकता होती है। मेले को इन उन्नयनों से

अस्थायी लाभ मिलता है, जो क्षेत्र के शहरी विकास और आधुनिकीकरण के लिए स्थायी परिणाम बनाते हैं क्योंकि वे स्थायी तीर्थयात्री और पर्यटकों के आकर्षण को बढ़ाते हैं। धार्मिक पर्यटन विकास से बेहतर परिवहन और सेवाएँ शहर और आस-पास के क्षेत्रों के आर्थिक प्रदर्शन को बढ़ाती हैं।

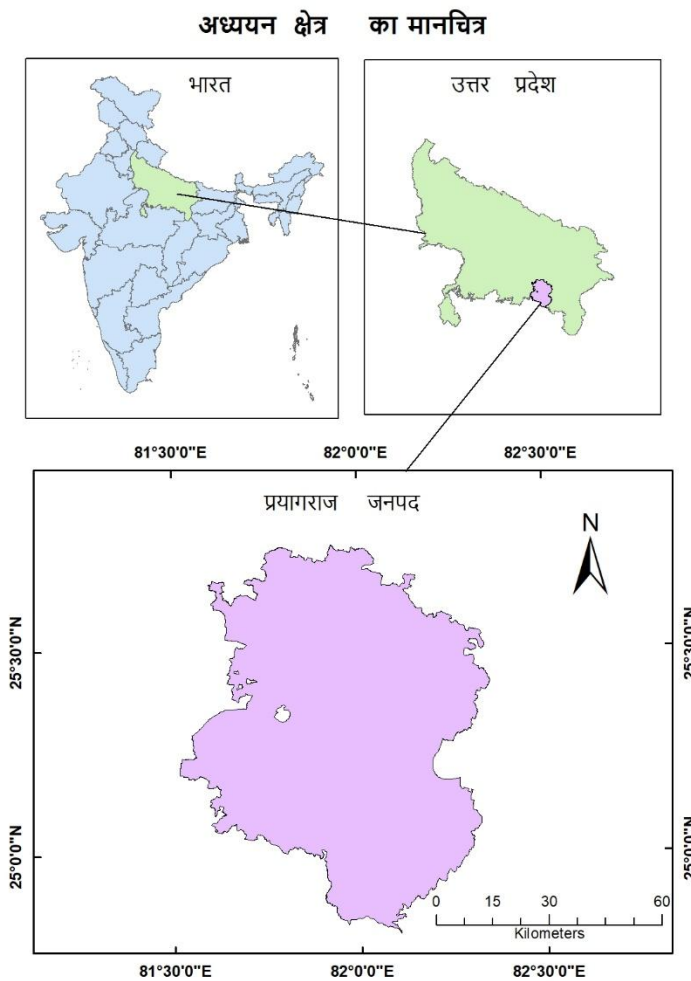
प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन से कई रोजगार के अवसर पैदा होते हैं जो क्षेत्र में सामाजिक विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं। कुंभ मेले के दौरान हज़ारों अल्पकालिक पद नौकरियों के लिए खुलते हैं जिनमें भवन निर्माण के साथ-साथ आयोजन कार्य और पर्यटकों को सेवा प्रदान करना शामिल है। स्थानीय निवासियों का कार्यबल धार्मिक पर्यटन के माध्यम से नए कौशल विकसित करता है क्योंकि वे भीड़ प्रबंधन और विशेष सेवा वितरण जैसी गतिविधियों में भाग लेते हैं। बड़े पैमाने पर होने वाले समारोहों के रखरखाव में पर्यावरणीय समस्याओं का सामना करना पड़ता है, साथ ही बुनियादी ढाँचे की क्षमताएँ अपनी सीमा तक पहुँच जाती हैं और दीर्घकालिक नियोजन आवश्यकताएँ होती हैं। धार्मिक पर्यटन प्रयागराज को महत्वपूर्ण आर्थिक लाभ प्रदान करता है लेकिन सतत विकास और सांस्कृतिक संरक्षण को उपयुक्त रणनीतिक ढाँचों द्वारा समर्थित किया जाना चाहिए।

### अध्ययन क्षेत्र: प्रयागराज जिला, उत्तर प्रदेश

प्रयागराज, जिसे पहले इलाहाबाद के नाम से जाना जाता था, भारत के उत्तरी भाग में एक प्रमुख शहर है, जो गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों के संगम पर स्थित है। इस भौगोलिक महत्व ने प्रयागराज को लंबे समय से धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियों का केंद्र बिंदु बना दिया है, जिसने हिंदू धर्म के सबसे पवित्र शहरों में से एक के रूप में इसकी स्थिति में योगदान दिया है। भौगोलिक दृष्टि से, प्रयागराज उत्तर प्रदेश राज्य में एक रणनीतिक स्थान पर स्थित है, जो राज्य की राजधानी लखनऊ से लगभग 200 किलोमीटर दक्षिण-पूर्व में है। यह जिला लगभग 5,482 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में फैला हुआ है और इसकी आबादी लगभग 5 मिलियन लोगों की है (2021 की जनगणना के अनुसार)। तीन नदियों के मिलन बिंदु पर शहर का स्थान - जिसे संगम के रूप में जाना जाता है - इसकी आध्यात्मिक अपील को बढ़ाता है और ऐतिहासिक रूप से देश भर और विदेश से तीर्थयात्रियों को आकर्षित करता है।

प्रयागराज की भौगोलिक स्थिति धार्मिक पर्यटन के केंद्र के रूप में इसकी स्थिति में एक महत्वपूर्ण कारक है। यह शहर गंगा के मैदानों और विंध्य पर्वत श्रृंखला के चौराहे पर स्थित है, जो कृषि और प्राकृतिक सुंदरता के लिए उपजाऊ भूमि दोनों प्रदान करता है। संगम की उपस्थिति, जहाँ तीन नदियाँ मिलती हैं, इस क्षेत्र के आध्यात्मिक और सांस्कृतिक महत्व को बढ़ाती है। तीर्थयात्री न केवल पवित्र नदियों में स्नान करने के लिए बल्कि धार्मिक अनुष्ठान करने के लिए भी प्रयागराज आते हैं, जिसमें 'पिंडदान' भी शामिल है, जिसे दिवंगत पूर्वजों की आत्मा को शांति प्रदान करने वाला माना जाता है। ये अनुष्ठान नदियों के तट पर किए जाते हैं और धार्मिक पर्यटकों के लिए एक प्रमुख आकर्षण हैं। भौगोलिक रूप से, प्रयागराज सड़क, रेल और हवाई मार्ग से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है, जिससे आध्यात्मिक उद्देश्यों के लिए शहर आने वाले लाखों भक्तों के लिए यह आसानी से सुलभ है। प्रयागराज की जलवायु, जो अत्यधिक गर्मियों और हल्की सर्दियों के साथ एक गर्म अर्ध-शुष्क जलवायु की विशेषता है, धार्मिक पर्यटन के समय और पैमाने में भी भूमिका निभाती है। गर्मियों के महीनों (अप्रैल से जून) में उच्च तापमान होता है, जो अक्सर 45 डिग्री सेल्सियस से अधिक होता है, जो इस समय के दौरान आगंतुकों की संख्या को प्रभावित कर सकता है। हालांकि, कुंभ मेला जैसे धार्मिक आयोजन आमतौर पर सर्दियों के महीनों में, जनवरी और फरवरी के बीच होते हैं, जब मौसम अपेक्षाकृत ठंडा होता है और बाहरी गतिविधियों के लिए अधिक अनुकूल होता है। यह भौगोलिक और जलवायु पैटर्न तीर्थयात्रियों के मौसमी प्रवाह को प्रभावित करता है, ठंड के महीनों के दौरान अधिकतम यात्राएँ होती हैं। परिवहन और अस्थायी आवास

सहित शहर का बुनियादी ढांचा विशेष रूप से इन समयों के दौरान आने वाले प्रवाह को प्रबंधित करने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जो धार्मिक पर्यटन के पैटर्न के साथ संरेखित है।



प्रयागराज को कई प्रशासनिक उपखंडों में विभाजित किया गया है, जिसमें प्रयागराज शहर जिला मुख्यालय और एक शहरी केंद्र है। जिले को 10 तहसीलों में विभाजित किया गया है, जिसमें शहरी, अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्र शामिल हैं, जिनमें से प्रत्येक क्षेत्र की धार्मिक पर्यटन अर्थव्यवस्था में अलग-अलग योगदान देता है। सबसे उल्लेखनीय धार्मिक क्षेत्र प्रयागराज के शहरी केंद्र के भीतर स्थित हैं, विशेष रूप से संगम, कुंभ मेला मैदान और कई प्रसिद्ध मंदिरों के आसपास। हालाँकि, खुसरो बाग, बड़े हनुमान मंदिर और त्रिवेणी संगम जैसे आसपास के क्षेत्र भी बड़ी संख्या में धार्मिक पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, जो धार्मिक पर्यटन के व्यापक आर्थिक लाभों में योगदान करते हैं। पहुँच के मामले में, प्रयागराज में एक प्रमुख रेलवे स्टेशन (प्रयागराज

जंक्शन) है, जो भारत के विभिन्न हिस्सों से आने वाले तीर्थयात्रियों के लिए एक प्रमुख पारगमन बिंदु है। शहर में एक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा भी है, जो इसकी कनेक्टिविटी को और बेहतर बनाता है और बड़ी संख्या में अंतरराष्ट्रीय धार्मिक पर्यटकों को आकर्षित करता है, खासकर कुंभ मेले जैसे महत्वपूर्ण आयोजनों के दौरान।

प्रयागराज के आस-पास के क्षेत्र, जैसे फाफामऊ, मुंगरा बादशाहपुर और इलाहाबाद ग्रामीण, भी जिले के धार्मिक पर्यटन में भूमिका निभाते हैं, हालांकि कम हद तक। ये ग्रामीण क्षेत्र, हालांकि घनी आबादी या शहरीकृत नहीं हैं, कृषि गतिविधियों के माध्यम से योगदान करते हैं और शहर में आने वाले तीर्थयात्रियों को आवास और अन्य सेवाएं प्रदान करते हैं। कुंभ मेले जैसे आयोजनों के दौरान आगंतुकों की संख्या के आंकड़ों से पता चलता है कि पूरे जिले में धार्मिक पर्यटन के कारण जनसंख्या में भारी वृद्धि देखी जाती है, स्थानीय अर्थव्यवस्था आतिथ्य, परिवहन और खुदरा जैसे संबंधित क्षेत्रों में तेज वृद्धि देख रही है।

**प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन का अवलोकन:**

प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन शहर के सांस्कृतिक और आध्यात्मिक महत्व में गहराई से निहित है। यह भारत और दुनिया भर के तीर्थयात्रियों के लिए एक प्रमुख केंद्र के रूप में कार्य करता है, जो गंगा, यमुना और पौराणिक सरस्वती नदियों के पवित्र संगम से आकर्षित होते हैं। यह शहर कई महत्वपूर्ण मंदिरों का घर है, जिसमें प्रसिद्ध संगम भी शामिल है, जहाँ भक्त अनुष्ठान करने और पवित्र स्नान करने के लिए इकट्ठा होते हैं। यह नियमित तीर्थयात्रा स्थानीय पर्यटन उद्योग का एक अभिन्न अंग है और पूरे वर्ष स्थिर आर्थिक लाभ प्रदान करती है। दैनिक आगंतुकों के साथ, प्रयागराज मकर संक्रांति और महाशिवरात्रि जैसे कई वार्षिक धार्मिक त्योहारों की मेजबानी करता है, जो आध्यात्मिक शांति की तलाश में बड़ी संख्या में आगंतुकों को आकर्षित करते हैं।

प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन का केंद्र निस्संदेह कुंभ मेला है। हर बारह साल में एक बार आयोजित होने वाला कुंभ मेला दुनिया का सबसे बड़ा धार्मिक समागम है, जिसमें दुनिया भर से लाखों श्रद्धालु आते हैं। इस आयोजन को यूनेस्को द्वारा मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत के रूप में मान्यता दी गई है और यह हिंदुओं के लिए गहरा धार्मिक महत्व रखता है। तीर्थयात्री तीन नदियों के संगम में स्नान करने के लिए शहर आते हैं, ऐसा माना जाता है कि इससे उनके पाप धुल जाते हैं और उन्हें आध्यात्मिक पुण्य मिलता है। इस आयोजन का पैमाना चौका देने वाला है, 2025 के कुंभ मेले में सिर्फ 45 दिनों में 400 मिलियन से ज्यादा आगंतुकों के आने का अनुमान है, जो इसे इतिहास के सबसे बड़े मानव समागमों में से एक बना देगा।

आगंतुकों की इतनी बड़ी आमद को प्रबंधित करने के लिए स्थानीय अधिकारियों, धार्मिक संगठनों और विभिन्न हितधारकों के समन्वित प्रयास की आवश्यकता होती है। सरकार, धार्मिक निकायों और स्थानीय समुदायों के सहयोग से, कुंभ मेले के दौरान सुचारू संचालन सुनिश्चित करने के लिए व्यापक योजना और संसाधन आवंटन करती है। तीर्थयात्रियों की ज़रूरतों को पूरा करने के लिए टेंट, स्नान घाट, सड़कें और चिकित्सा सुविधाएँ जैसी अस्थायी संरचनाएँ स्थापित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त, आगंतुकों की सुरक्षा और आराम सुनिश्चित करने के लिए स्वच्छता, अपशिष्ट प्रबंधन और परिवहन नेटवर्क को बढ़ाने के लिए एक ठोस प्रयास किया जाता है। इतने बड़े पैमाने के आयोजन के प्रबंधन के लिए न केवल बुनियादी ढाँचे के विकास की आवश्यकता होती है, बल्कि भीड़ नियंत्रण, सुरक्षा और आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रणालियों पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है।

कुंभ मेले के अलावा प्रयागराज को पूरे साल धार्मिक पर्यटकों के निरंतर प्रवाह से भी लाभ मिलता है। पर्यटक प्रसिद्ध आनंद भैरव मंदिर, हनुमान मंदिर और मनकामेश्वर मंदिर जैसे विभिन्न मंदिरों में प्रार्थना करने आते हैं। ये मंदिर महत्वपूर्ण धार्मिक केंद्र हैं और प्रतिदिन तीर्थयात्रियों को आकर्षित करते हैं जो आवास, भोजन और स्थानीय हस्तशिल्प पर खर्च करके स्थानीय अर्थव्यवस्था में योगदान करते हैं। स्थानीय कारीगर धार्मिक स्मृति चिन्ह बेचकर भी फलते-फूलते हैं, जो आगंतुकों के लिए स्मृति चिन्ह के रूप में काम आते हैं। इसके अतिरिक्त, माघ मेला जैसे छोटे त्यौहार भी हैं जो साल भर धार्मिक पर्यटकों की आमद में योगदान करते हैं। कुंभ मेले के पैमाने पर न होने के बावजूद, ये त्यौहार अभी भी पर्याप्त आर्थिक गतिविधि उत्पन्न करते हैं और प्रयागराज को एक प्रमुख तीर्थ स्थल के रूप में बनाए रखते हैं। प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन का प्रभाव केवल आर्थिक लाभ से परे है। यह सांस्कृतिक आदान-प्रदान और सामाजिक सद्भाव को बढ़ावा देता है, क्योंकि विभिन्न क्षेत्रों और पृष्ठभूमियों से तीर्थयात्री अपनी आस्था का जश्न मनाने के लिए एक साथ आते हैं। पर्यटन क्षेत्र से जुड़े सांस्कृतिक और धार्मिक कार्यक्रम स्थानीय लोगों को पारंपरिक संगीत और नृत्य प्रदर्शनों से लेकर आध्यात्मिक प्रवचनों और अनुष्ठानों तक अपनी विरासत को प्रदर्शित करने का एक मंच प्रदान करते हैं। इसके अलावा, आगंतुकों की आमद से स्थानीय उद्योगों को मदद मिलती है, जिसमें आतिथ्य, परिवहन और खुदरा व्यापार शामिल हैं, जिससे एक गतिशील और विविध स्थानीय अर्थव्यवस्था बनती है। प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन की भूमिका

सिर्फ इसके आर्थिक योगदान तक ही सीमित नहीं है, बल्कि यह शहर की सांस्कृतिक और आध्यात्मिक पहचान को मज़बूत करने में भी अहम भूमिका निभाता है।

### धार्मिक पर्यटन का आर्थिक योगदान

प्रत्यक्ष आर्थिक प्रभाव

प्रयागराज में 2025 का महाकुंभ मेला इस क्षेत्र में आध्यात्मिक मूल्य और वित्तीय लाभ दोनों लेकर आया। कई विशेषज्ञों का अनुमान है कि इस मेले से 3 लाख करोड़ रुपये (लगभग 36 बिलियन डॉलर) का राजस्व प्राप्त हुआ। इस आयोजन से होने वाली भारी आय ने उत्तर प्रदेश की वित्तीय स्थिरता को काफी हद तक बढ़ा दिया, क्योंकि आस्था प्रणाली आर्थिक कारकों के साथ शक्तिशाली रूप से जुड़ती है।

महाकुंभ मेले में शामिल होने वाले तीर्थयात्रियों की भारी संख्या ने सभी प्रकार के स्थानीय व्यवसायों के लिए महत्वपूर्ण विकास के अवसर पैदा किए। आतिथ्य सेवाओं की मांग में वृद्धि हुई, जिसके कारण होटलों और अस्थायी आवास सुविधाओं और गेस्टहाउस में कंपनी के मुनाफे में वृद्धि हुई। स्ट्रीट वेंडर से लेकर रेस्तराँ और कैटरर्स तक खाद्य सेवा प्रदाताओं को कुंभ मेले में आने वाले आगंतुकों की संख्या से बड़ा लाभ मिला। स्थानीय अर्थव्यवस्था को धार्मिक वस्तुओं के खुदरा स्टोर और धार्मिक वस्तुओं के साथ-साथ स्मृति चिन्ह बेचने वाले सभी व्यवसायों से समर्थन मिला। कुंभ मेले ने आर्थिक प्रभाव उत्पन्न किया जो प्रयागराज के आस-पास के इलाकों में फैल गया और समग्र क्षेत्रीय विकास को बढ़ावा दिया। प्रमुख धार्मिक समारोहों के कारण स्थानीय व्यवसायों में आर्थिक गतिविधि फली-फूली, जिससे बड़ी वित्तीय आय हुई।

### बुनियादी ढांचे का विकास

**शहरी नियोजन:** महाकुंभ मेला 2025 के दौरान तीर्थयात्रियों की अभूतपूर्व आमद को समायोजित करने के लिए, प्रयागराज में महत्वपूर्ण शहरी परिवर्तन किए गए। एक अस्थायी शहर, महाकुंभ नगर की स्थापना की गई, जो 4,000 हेक्टेयर में फैला हुआ था और लाखों उपस्थित लोगों के लिए आवश्यक सुविधाएँ प्रदान करता था। इस विशाल क्षेत्र में लगभग 150,000 टेंट थे, जिनमें बुनियादी और लक्जरी दोनों तरह के आवास उपलब्ध थे, जिनमें आधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित डीलक्स टेंट और विला शामिल थे। मेला क्षेत्र को 25 क्षेत्रों में संगठित किया गया था, जिनमें से प्रत्येक समर्पित जल आपूर्ति, जल निकासी और अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों के साथ एक आत्मनिर्भर इकाई के रूप में कार्य करता था, जिससे कुशल भीड़ प्रबंधन और पहुँच सुनिश्चित होती थी।

**परिवहन:** मजबूत परिवहन बुनियादी ढांचे की आवश्यकता को पहचानते हुए, पारगमन के विभिन्न साधनों में व्यापक उन्नयन लागू किए गए। भारतीय रेलवे ने तीर्थयात्रियों की भारी आमद को प्रबंधित करने के लिए कार्यक्रम के दौरान 3,134 विशेष ट्रेनों सहित रिकॉर्ड 13,000 ट्रेन सेवाओं का संचालन किया। इस पहल ने प्रयागराज और देश भर के प्रमुख शहरों के बीच निर्बाध संपर्क सुनिश्चित किया। इसके अतिरिक्त, उत्तर प्रदेश राज्य सड़क परिवहन निगम (यूपीएसआरटीसी) ने मेला क्षेत्र में 7,000 से अधिक बसें तैनात कीं, जिनमें कम से कम 100 इलेक्ट्रिक बसें भी शामिल थीं। ये बसें वाहन स्थान ट्रेकिंग डिवाइस (वीएलटीडी), पैनिक बटन और कोहरे से सुरक्षा उपकरण जैसी सुरक्षा सुविधाओं से सुसज्जित थीं, जिससे यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा में वृद्धि हुई। यातायात को और अधिक सुव्यवस्थित करने और सुचारू आवागमन सुनिश्चित करने के लिए, समर्पित लेन और वास्तविक समय निगरानी प्रणाली सहित एक व्यापक यातायात प्रबंधन योजना लागू की गई थी।

### रोजगार सृजन

### अस्थायी रोजगार:

कुंभ मेला, अपने विशाल पैमाने के साथ, कई क्षेत्रों में बड़ी संख्या में अस्थायी रोजगार के अवसर पैदा करता है। प्रयागराज में लाखों तीर्थयात्रियों के आने से निर्माण, आतिथ्य, परिवहन और इवेंट मैनेजमेंट में सेवाओं की मांग नाटकीय रूप से बढ़ जाती है। स्थानीय निवासियों को अक्सर बढ़ती आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए अंशकालिक श्रमिकों या अस्थायी कर्मचारियों के रूप में नियुक्त किया जाता है। निर्माण श्रमिकों को अस्थायी बुनियादी ढांचे के तेजी से विकास के लिए काम पर रखा जाता है, जिसमें टेंट, शौचालय, सड़क और स्नान घाटों का निर्माण शामिल है। होटल, गेस्टहाउस और तीर्थयात्रियों के लिए स्थापित अस्थायी आवास सुविधाओं में शेफ, हाउसकीपिंग स्टाफ और रिसेप्शनिस्ट जैसे आतिथ्य कार्यकर्ता बहुत मांग में हैं। इसके अलावा, धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजन, भीड़ नियंत्रण और सुरक्षा उपायों को संभालने के लिए इवेंट मैनेजमेंट कर्मियों को काम पर रखा जाता है। रिपोर्टों के अनुसार, महाकुंभ मेला 2025 के दौरान, यह उम्मीद की जाती है कि 200,000 से अधिक अस्थायी नौकरियां पैदा होंगी, जो स्थानीय आबादी को पर्याप्त आय प्रदान करेंगी। इसमें सुरक्षा, स्वच्छता, स्वास्थ्य सेवाएं और खाद्य विक्रेता जैसे क्षेत्रों में भूमिकाएं शामिल हैं।

**कौशल विकास:** तत्काल रोजगार के अवसर पैदा करने के अलावा, कुंभ मेला स्थानीय कार्यबल के बीच कौशल विकास को प्रोत्साहित करता है, खासकर आतिथ्य, इवेंट मैनेजमेंट और सेवा उद्योग जैसे क्षेत्रों में। स्थानीय कर्मचारी अक्सर कार्यक्रम की विशिष्ट आवश्यकताओं, जैसे भीड़ प्रबंधन, अतिथि सेवा और आपातकालीन प्रतिक्रिया को पूरा करने के लिए अल्पकालिक प्रशिक्षण कार्यक्रमों से गुजरते हैं। उदाहरण के लिए, श्रमिकों को लोगों के बड़े समूहों को संभालने, गुणवत्तापूर्ण ग्राहक सेवा प्रदान करने और स्वच्छता और सफाई के उच्च मानकों को बनाए रखने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। यह अपस्किलिंग स्थानीय निवासियों की रोजगार क्षमता को बढ़ाता है, जिनमें से कई को मूल्यवान अनुभव प्राप्त होता है जिसे भविष्य में पर्यटन से संबंधित गतिविधियों में लागू किया जा सकता है। स्थानीय कार्यबल को वैश्विक पर्यटन प्रथाओं के संपर्क से भी लाभ होता है, जो क्षेत्र में सेवाओं के मानक को बेहतर बनाने में सहायता करता है। इन अल्पकालिक परियोजनाओं में भाग लेने से, व्यक्ति न केवल अपने कार्य कौशल में सुधार करते हैं बल्कि बड़े पैमाने पर इवेंट मैनेजमेंट में भी अनुभव प्राप्त करते हैं, जो प्रयागराज और व्यापक पर्यटन उद्योग दोनों में रोजगार के अवसरों के द्वार खोल सकता है। इसके अतिरिक्त, इन प्रशिक्षण कार्यक्रमों के दीर्घकालिक लाभ हो सकते हैं, क्योंकि इस तरह के बड़े पैमाने पर आयोजनों के दौरान सीखे गए कौशल शहर के अन्य क्षेत्रों में हस्तांतरित किए जा सकते हैं, जिससे रोजगार के अवसरों में और वृद्धि होती है।

### सामाजिक और सांस्कृतिक प्रभाव

#### सामुदायिक जुड़ाव:

कुंभ मेला अन्य प्रमुख धार्मिक आयोजनों के साथ-साथ एक मूलभूत तत्व के रूप में कार्य करता है जो सामुदायिक भागीदारी और सामाजिक बंधनों को बढ़ावा देता है। विभिन्न पृष्ठभूमियों से लाखों लोगों का मिलन स्थल एक ऐसा स्थान बनाता है जो सांस्कृतिक अनुभवों और समझ को बढ़ावा देने के लिए समुदाय के सदस्यों और आगंतुकों को एक साथ लाता है। प्रयागराज के लोग इस प्रमुख सभा की मेजबानी के माध्यम से सामाजिक एकता का अनुभव करते हैं क्योंकि कई भक्ति समुदाय इस आयोजन को आयोजित करने के प्रयासों में शामिल होते हैं। स्थानीय परिवार जिम्मेदारी बनाने के तरीके के रूप में तीर्थयात्रियों को भोजन सहायता और आश्रय सहायता प्रदान करने के लिए खुद को समर्पित करते हैं, जबकि तीर्थयात्रियों के विभिन्न क्षेत्र अपनी अनूठी सांस्कृतिक प्रथाओं के साथ-साथ रीति-रिवाजों और भाषाओं का योगदान देते हैं, जिसके परिणामस्वरूप एक जीवंत पारंपरिक क्रॉस-परागण होता है। प्रथाओं के माध्यम से सांस्कृतिक

ज्ञान का पारस्परिक आदान-प्रदान समाज को जोड़ता है और प्रयागराज को सांस्कृतिक विविधता बढ़ाने की दिशा में आगे बढ़ाता है। धार्मिक पर्यटन गतिविधियों जैसे प्रमुख आयोजनों में उनकी प्रत्यक्ष भागीदारी के माध्यम से समुदाय सामाजिक बंधनों को मजबूत करता है क्योंकि ये आयोजन निवासियों के बीच मजबूत संबंध विकसित करने के साथ-साथ स्थानीय व्यवसायों के लिए आर्थिक लाभ भी प्रदान करते हैं।

**विरासत का संरक्षण:** कुंभ मेले में बड़ी संख्या में पर्यटक आते हैं, जो दर्शाता है कि महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों के साथ-साथ बहुमूल्य परंपराओं को बनाए रखना क्यों आवश्यक है, जो बड़ी संख्या में श्रद्धालु भक्तों को आकर्षित करती हैं। निष्क्रिय संरक्षण और सक्रिय संरक्षण उपायों का महत्व अब बढ़ गया है, क्योंकि यह शहर दुनिया भर में धर्मों के लिए एक प्रमुख गंतव्य के रूप में उभर रहा है। संगम तट पर स्थित धार्मिक स्थल प्रसिद्ध मंदिरों के साथ-साथ घाटों और ऐतिहासिक ऐतिहासिक संरचनाओं के माध्यम से धार्मिक पर्यटन के मौसम में अधिकतम मान्यता प्राप्त करते हैं। सरकारी निकायों और गैर-सरकारी एजेंसियों के नेतृत्व में कई संगठन अब बढ़ती जागरूकता के कारण इन पवित्र स्थलों की रक्षा के लिए मिलकर काम करते हैं। कुंभ मेले से पहले अधिकारियों द्वारा किए गए पर्याप्त वित्तीय निवेश से मंदिरों के जीर्णोद्धार में मदद मिलती है, साथ ही पवित्र घाटों की पवित्रता को भी बनाए रखा जाता है। उत्तर प्रदेश सरकार त्रिवेणी संगम जैसे प्रमुख धार्मिक स्थलों के जीर्णोद्धार के लिए सक्रिय प्रयास करती है, जबकि भविष्य के यात्रियों के लिए उनकी पहुँच बनाए रखती है। अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की रक्षा के उद्देश्य से नए कार्यक्रम शुरू किए गए, क्योंकि धार्मिक पर्यटन इस आयोजन के पवित्र अनुष्ठानों और औपचारिक अभिव्यक्तियों और परंपराओं से जुड़ा हुआ है। धार्मिक पर्यटन की शक्ति प्रयागराज की सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में सहायता के रूप में कार्य करती है, जिससे पारंपरिक प्रथाओं की रक्षा होती है, जो आज और कल के लिए आध्यात्मिक यात्रा गंतव्य और सांस्कृतिक मील का पत्थर दोनों के रूप में शहर की स्थिति को बढ़ाती है।

### चुनौतियाँ और स्थिरता

#### पर्यावरण संबंधी चिंताएँ:

कुंभ मेला अन्य धार्मिक पर्यटन गतिविधियों के साथ-साथ पर्यावरण प्रबंधन की बड़ी कठिनाइयों का सामना करता है। पर्यावरण संबंधी दबाव असाधारण स्तर तक बढ़ जाता है क्योंकि लाखों की संख्या में पर्यटक आते हैं, क्योंकि इन यात्रियों को अपशिष्ट निपटान और नदी संरक्षण के संबंध में प्रबंधित किया जाना चाहिए। गंगा-यमुना-सरस्वती नदी के संगम पर पवित्र स्नान अनुष्ठान करने वाले लाखों तीर्थयात्रियों के संयोजन से धार्मिक प्रसाद निपटान और प्लास्टिक अपशिष्ट संचय और अतिरिक्त प्रदूषकों के माध्यम से जल प्रदूषण का जोखिम पैदा होता है। पिछले कुंभ मेले के आयोजनों के दौरान नदियों को प्रदूषण के प्रभावों का सामना करना पड़ा, जिससे प्राकृतिक पर्यावरण को दीर्घकालिक नुकसान हुआ। नदी की सफाई पर तत्काल ध्यान देने की आवश्यकता है क्योंकि यह आयोजन के दौरान धार्मिक आचरण और स्थानीय पारिस्थितिक कल्याण दोनों को प्रभावित करती है। प्राधिकरण के अधिकारी पर्यावरण संबंधी मुद्दों का मुकाबला करने के लिए बेहतर स्वच्छता सुविधाओं के साथ-साथ आधुनिक अपशिष्ट उपचार कार्यक्रमों के माध्यम से काम करते हैं जो पूरे आयोजन के दौरान तीर्थयात्रियों को पर्यावरण संरक्षण के बारे में जागरूकता संदेश देते हैं। इस आयोजन की विशालता स्थानीय पर्यावरणीय स्वास्थ्य के लिए स्थायी समस्याएँ पैदा करती है, जिन्हें भविष्य के उत्सव संचालन को विकसित करने में प्राथमिकता दी जानी चाहिए।

#### बुनियादी ढाँचा तनाव:

कुंभ मेले के लिए स्थायी बुनियादी ढाँचे के विकास की आवश्यकता होती है जो अधिकतम अवधि के उपयोग से भारी भार को सहन कर सके। कुंभ मेले के सभी अस्थायी बुनियादी ढाँचे जैसे कि सड़कें और शौचालयों पर उच्च गुणवत्ता

वाला मानक लागू होना चाहिए क्योंकि इससे सुविधा को स्थायी क्षति के बिना बड़ी संख्या में आगंतुकों के आने पर भी टिके रहने में मदद मिलती है। जब गतिविधि अपने चरम पर होती है, तो मौजूदा सुविधाएँ अधिकतम क्षमता पर तब तक संचालित होती हैं जब तक कि आयोजन के सभी अस्थायी घटक घटना के बाद अलग नहीं हो जाते। मुख्य मुद्दा स्थायी बुनियादी ढाँचे के उन्नयन को विकसित करना है जो आयोजन के बाद के चरणों में स्थायी लाभ प्रदान करते हैं। स्वच्छता प्रणालियों के साथ-साथ नए सार्वजनिक परिवहन और सड़कों का त्वरित निर्माण उनकी पर्याप्त गुणवत्ता में सुधार के बावजूद स्थिरता जोखिम पैदा करता है। बुनियादी ढाँचे की उन्नति को स्थायी उद्देश्यों के लिए डिज़ाइन किया जाना चाहिए क्योंकि वे भविष्य की ज़रूरतों को पूरा करते हैं। शहर को भविष्य के शहरी विस्तार की योजना बनाने और स्थायी सुधार स्थापित करने के साथ-साथ विकास में मजबूत सामग्रियों का उपयोग करने की आवश्यकता है जो पूरे शहर को आगे बढ़ाते हैं। शहर को बिजली, पानी और अपशिष्ट प्रणालियों के बीच संसाधनों को वितरित करने के लिए उचित योजना की आवश्यकता है ताकि निवासी बड़े पैमाने पर होने वाले आयोजनों के दौरान संतोषजनक जीवन स्तर बनाए रख सकें। शहरी विकास टीमों को अपनी योजना में स्थिरता बनाए रखते हुए रणनीतिक बुनियादी ढाँचा निवेश करके बड़े धार्मिक आयोजनों को ठीक से प्रबंधित करने की चुनौती का सामना करना पड़ता है।

### नीतिगत अनुशंसाएँ

#### एकीकृत नियोजन:

- धार्मिक पर्यटन के बुनियादी ढाँचे, पर्यावरण और सामाजिक आयामों को संबोधित करने वाली एक व्यापक रणनीति विकसित करें।
- स्थानीय निवासियों और पर्यटकों दोनों के लिए दीर्घकालिक बुनियादी ढाँचे में सुधार सुनिश्चित करें।
- बड़े पैमाने पर होने वाले आयोजनों का समर्थन करने के लिए कुशल अपशिष्ट प्रबंधन, स्वच्छता और सार्वजनिक सुविधाओं की योजना बनाएँ।

#### हितधारक सहयोग:

- स्थानीय समुदायों, धार्मिक संगठनों, सरकारी निकायों और पर्यटन प्राधिकरणों को नियोजन और निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में शामिल करें।
- यह सुनिश्चित करने के लिए सहयोग को बढ़ावा दें कि धार्मिक पर्यटन से आर्थिक रूप से वंचित समूहों सहित समाज के सभी क्षेत्रों को लाभ मिले।
- ऐसी समावेशी नीतियाँ बनाएँ जो सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक दृष्टिकोणों को शामिल करें।

#### संधारणीय अभ्यास:

- अपशिष्ट पृथक्करण, जल उपचार और प्रदूषण नियंत्रण सहित प्रदूषण को कम करने के लिए पर्यावरण की दृष्टि से संधारणीय अभ्यासों को लागू करें।
- कार्बन पदचिह्नों को कम करने के लिए इलेक्ट्रिक बसों जैसे पर्यावरण के अनुकूल परिवहन विकल्पों को बढ़ावा दें।
- संरक्षण प्रयासों के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत स्थलों के संरक्षण और पवित्र स्थानों की सुरक्षा पर ध्यान दें।

निष्कर्ष के तौर पर, प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन, खास तौर पर कुंभ मेले जैसे बड़े पैमाने के आयोजनों के दौरान, स्थानीय अर्थव्यवस्था को आगे बढ़ाने, सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देने और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। हालांकि, पर्यावरणीय स्थिरता और बुनियादी ढांचे पर दबाव की चुनौतियों का प्रबंधन करने के लिए स्थानीय समुदायों, सरकारी निकायों और धार्मिक संगठनों के बीच सावधानीपूर्वक योजना और सहयोग की आवश्यकता होती है। एकीकृत योजना को अपनाकर, टिकाऊ प्रथाओं को बढ़ावा देकर और हितधारकों की भागीदारी सुनिश्चित करके, प्रयागराज धार्मिक पर्यटन के आर्थिक और सामाजिक लाभों का दोहन जारी रख सकता है और साथ ही भविष्य की पीढ़ियों के लिए अपनी आध्यात्मिक और पर्यावरणीय विरासत की रक्षा कर सकता है।

### संदर्भ

1. कुमार, प. (2020). धार्मिक पर्यटन और सामाजिक-आर्थिक विकास. भारतीय सांस्कृतिक अध्ययन पत्रिका, 25(3), 45-58.
2. यादव, र. (2019). कुंभ मेला और प्रयागराज के आर्थिक प्रभाव. भारतीय पर्यटन शोध, 12(2), 112-124.
3. वर्मा, म. (2021). धार्मिक पर्यटन के सामाजिक प्रभाव: प्रयागराज का उदाहरण. राष्ट्रीय पर्यटन अनुसंधान पत्रिका, 15(1), 78-90.
4. शर्मा, ब. (2022). प्रयागराज के धार्मिक पर्यटन का विकास. भारतीय विकास पत्रिका, 9(4), 210-225.
5. सिंह, ज. (2020). प्रयागराज में कुंभ मेला का पर्यावरणीय प्रभाव. पर्यावरण और विकास, 18(2), 56-70.
6. पांडे, र. (2018). प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक पहचान. संस्कृति और समाज, 14(1), 95-106.
7. शर्मा, वी. (2017). कुंभ मेला: पर्यटन और अर्थव्यवस्था. पर्यटन अनुसंधान एवं नीति, 22(5), 142-158.
8. त्रिपाठी, स. (2020). कुंभ मेला और क्षेत्रीय विकास. भारतीय पर्यटन विकास रिपोर्ट, 7(6), 34-47.
9. गुप्ता, न. (2021). प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन की सामाजिक-आर्थिक समीक्षा. ग्रामीण विकास पत्रिका, 13(3), 85-97.
10. चौधरी, आर. (2019). धार्मिक पर्यटन के लिए रणनीतियाँ: प्रयागराज का उदाहरण. पर्यटन प्रबंधन, 16(2), 109-123.
11. मिश्रा, र. (2022). प्रयागराज के कुंभ मेला में पर्यावरणीय चुनौतियाँ और समाधान. पर्यावरण अध्ययन, 19(4), 112-126.
12. शर्मा, पी. (2021). प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन और सांस्कृतिक पर्यटन के मध्य संबंध. सांस्कृतिक शोध पत्रिका, 11(1), 65-78.
13. वर्मा, ड. (2018). प्रयागराज में कुंभ मेला के दौरान रोजगार सृजन. रोजगार और विकास, 14(3), 154-168.
14. यादव, श. (2020). प्रयागराज में धार्मिक पर्यटन और इसके पर्यावरणीय प्रभाव. पर्यावरण और सामाजिक अध्ययन, 23(2), 34-48.
15. कुमार, स. (2019). प्रयागराज के कुंभ मेला में टिकाऊ विकास और उसके लाभ. विकास और नीति पत्रिका, 8(6), 89-103.